विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 48, अक्टूबर-2024

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई- पत्रिका, अक्टूबर – *2024*

ज्ञानोदय (अंक-48)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाशवीर(प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह,

ब०प्रतीक्षा दीक्षित

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- विभागीय खेल-कूद प्रतियोगिता
- अंग्रेजी विषय के क्रियाकलाप
- लेख (उत्सव, जयन्ती एवं दिवस)
- केन्द्रीय अधिकारी प्रवास
- मातृ भारती व बाल सुरक्षा समिति बैठक
- स्वर्णप्राशन
- प्रान्तीय प्रधानाचार्य बैठक
- भगिनी निवेदिता जयन्ती
- साक्षात्कार
- दीपावली कार्यक्रम
- सरदार बल्लभ भाई पटेल जयन्ती
- जन्मोत्सव हवन-कार्यक्रम
- बताओ तो जाने
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

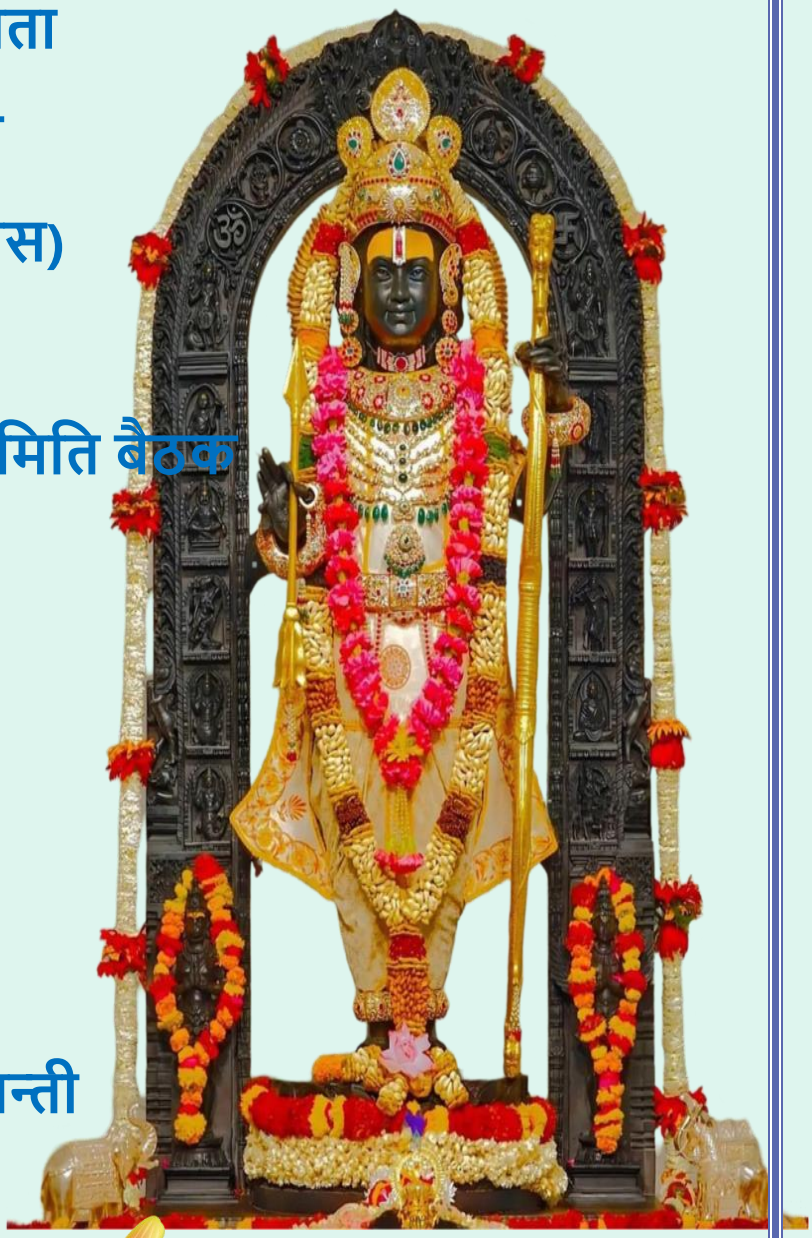

संपादकीय

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। जिसे विश्वभर की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। कला, विज्ञान या राजनीति का क्षेत्र हो, भारतीय संस्कृति हमेशा से विशेष रही है।

हमेशा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है। प्राचीन भारत के धर्म, दर्शन, शास्त्र, कला, राजनीति, संस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के स्वरुप को देखा जा सकता है। पारंपरिक भारतीय भोजन, कला, संगीत, खेल, कपड़े और वास्तुकला अलग-अलग क्षेत्रों में काफी भिन्न होते हैं।

इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में हमारे त्योहार भी बहुत महत्वपूर्ण है। जो हमारे मूल्यों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम हैं।

हमारे भैया/बहिनों के लिए भारत के त्यौहार उन्हें सामाजिक रूप से जिम्मेदार और सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति बनने के लिए आवश्यक सामाजिक कौशल सिखाने का एक बेहतरीन अवसर हैं। हर उत्सव अपने साथ खुशी, उत्साह और उल्लास की भावना लेकर आता है।

इस संदर्भ में हमारे शिशु मंदिर परिवार में भी हर त्योहार को भैया/बहिनों के बीच मनाया जाता है, जिससे वह हमारे भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान और कृतज्ञता जैसे मूल्य को सीख सकें ।

अनु सिंह
(अंक सम्पादक)
स०शि०म०,नोएडा

प्रधानाचार्य जी की कलम से

भारतीय ज्ञान परंपरा

स्वदेशी शिक्षा ही शिक्षार्थी की अभिव्यक्ति और विचारों को प्रतिबिंबित करती है। यदि वृक्ष अपनी जड़ों से अलग हो जाए तब उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। पिछले लगभग 175 वर्ष पुरानी लॉर्ड मैकाले द्वारा भारतीयों पर थोपी गई अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के कारण हमारे देश की पीढ़ी की भी कुछ ऐसी ही स्थिति हुई है। दुर्भाग्य से स्वतंत्र भारत में भी हमारी शिक्षा को स्वदेश से जोड़ने का कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया। किंतु हम सभी के लिए हर्ष की बात यह है कि वर्तमान केंद्र सरकार के द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में फिर से शिक्षा को भारत के मूल स्वभाव (हमारी जड़ों) से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया गया है।

जब हम स्वदेशी शिक्षा को अमल में लाने की बात करते हैं तब यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके लिए स्वभाषा (मातृभाषा) का प्रश्न प्राथमिक और महत्वपूर्ण है। हमें समझना होगा, कि भाषा मात्र संप्रेषण का माध्यम नहीं है, यह संस्कृति की संवाहिका है। जिस भाषा को बालक मां के गर्भ से सीखना प्रारंभ करता है उसमें वह सहजता से सीखता है। "स्वभाषा में शिक्षा" यह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक दृष्टि है। राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, महापुरुषों एवं समय-समय पर गठित शैक्षिक आयोगों ने भी बालक की शिक्षा को मातृभाषा में कराने की स्वीकारोक्ति की है।

इसी बात को पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए. पी.जे. अब्दुल कलाम ने एक महाविद्यालय में छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा था, "कि मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना कि मेरी 12वीं तक की पढ़ाई मातृभाषा में हुई है"।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समावेश करने की अनुशंसा की गई है। भारत में शिक्षा का लक्ष्य ज्ञानार्जन करना मात्र नहीं रहा, बल्कि आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में "सा विद्या या विमुक्तये" माना गया है। छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में अपितु व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी दृष्टिगत हो। इसके लिए भारतीय संवैधानिक एवं नैतिक मूल्यों, स्वदेशी, स्थानीय भाषा, कला- कारीगरी, परंपरा के समावेश तथा भारतीय संस्कृति, खेल एवं कला का एकीकरण कर विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश करने पर बल दिया गया है।

बालक के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से तैत्तिरीयोपनिषद में दी गई अधोलिखित पंचकोश की संकल्पना को आधार बनाकर इसे सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों में जोड़े जाने की आवश्यकता है ।

(1) अन्नमय कोश (शारीरिक विकास) (2)प्राणमय कोश (प्राणिक विकास) (3) मनोमय कोश (मानसिक विकास) (4) विज्ञानमय कोश (बौद्धिक विकास) (5) आनन्दमय कोश (नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास)

इसके साथ ही शैक्षिक संस्थानों की व्यवस्था में भारतीयता के बोध का पोषण होना आवश्यक है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा देश और दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम होगा।

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

विभागीय खेल-कूद प्रतियोगिता

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

खेल कूद प्रतियोगिता

खेलकूद प्रतियोगिता में 39 छात्र-छात्राएं रहे अव्वल

नोएडा (युग करवट)। विद्या भारती गाजियाबाद विभाग के दलीय खेलकूद (कबड्डी, खो-खो कुश्ती व बैडमिंटन) की प्रतियोगिताएं नोएडा के सेक्टर-12 स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में संपन्न हुई।

विद्यालय प्रबंधक प्रदीप भारद्वाज, संभाग निरीक्षक राजीव सहित प्रधानाचार्यों, संरक्षक आचार्यों व निर्णायक मंडल (प्रकाश वीर, शीतल सिंघल, सुधा बाना, राम भूल, श्रीराम, ललित, प्रदीप तोमर, हर्ष ,नंदिनी, सुनीता कौशिक, तिरमल सिंह, लेखराज सिंह, विकास, विधि, मोनू व प्रबल प्रताप आदि) की देखरेख में गाजियाबाद विभाग के 9 विद्यालयों से आए 225 छात्रों की सभी प्रतियोगिताएं संपन्न हुई।

नोएडा विद्यालय के छात्रों ने अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए खो-खो में 11-11 छात्र-छात्राएं, कबड्डी में 9 छात्राएं, कुश्ती में 3 छात्र व 2 छात्राएं तथा बैडमिंटन में 3 छात्र शामिल हुए। जिसमें 17 छात्र व 22 छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार कबड्डी में 9 छात्र, कुश्ती में 2 छात्र व 2 छात्राएं तथा बैडमिंटन में 1 छात्रा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

वहीं कुश्ती में एक छात्रा व बैडमिंटन के 2 छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का मान बढ़ाया। खेल के समापन पर विद्यालय परिवार ने खेलकूद में अव्वल आने वाले सभी छात्र-छात्राओं तथा उनकी तैयारी करने वाले संरक्षक आचार्यों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए निर्णायक मंडल का आभार व्यक्त किया।

विद्या भारती गाजियाबाद विभागीय खेल - कूद (कबड्डी ,खो-खो, कुश्ती व बैडमिंटन) की प्रतियोगिताएं दि०-01अक्टूबर 2024 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में तथा एथलीट की प्रतियोगिता दिनांक-29 अक्टूबर2024 को सरस्वती शिशु मन्दिर गढ़मुक्तेश्वर में संपन्न हुई।

अंग्रेजी विषय के क्रियाकलाप

CLASS-NURSERY

Topic - Capital Alphabets

Characteristic - English is an international language that helps us to connect with other countries.

Objective - 1. knowledge of capital alphabets.
2. Development of speaking ability.
3. Recognition of alphabets.

Activity – 1. Improve knowledge of students through pictures , puzzles mats.
2. Match the picture with the alphabet.

Five Dimensional Development - See, listen or recognize letters through joyful learning which help in intellectual development .

CLASS- L.K.G.

Topic - Upper-Case Letters to Lower Case

Objective – 1. Changing of Upper-Case Letters to Lower Case.

2. To enable students to match Upper case letters with Lower case.

Required Material - Black board, Flash Card, Ball, Glass

Arrangement - Capital Letters are written on glass and Small Letters are written on balls.

Activity – Students identify lower case letters written on balls and put them in the Glass on which upper case letters are written.

Development - Development of Anandmaya kosh and Manomaya kosh.

CLASS- U.K.G.

Topic - Singular or Plural

Objective: - 1• knowledge of singular or plural.
2•To use 's' properly at the end of word to indicate, it is a singular or plural.
3• To encourage student participation in pair work.

Activity: - 1. Improve knowledge of the students through picture flash card.
2• starts lesson by explaining in simple terms the word singular and plural.
3• show the small card of letters and also read the word from the blackboard

Dimensional Development: - Recognize word easily, develop of reading ability, development of concept understanding skill.

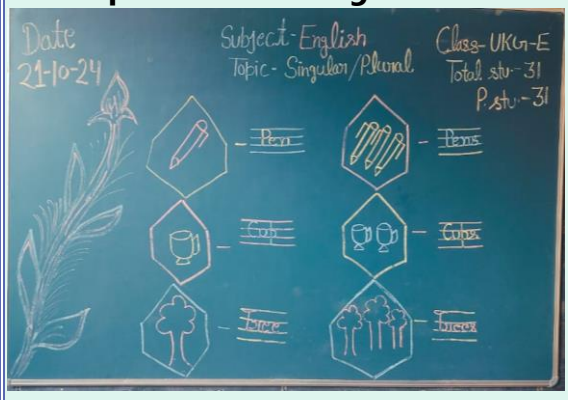

CLASS- I[st]

Topic - Days of the week

Objective - 1- students can able to understand days of the week.
2- students can use days name in daily life.
3- students can able to identify the day before and after a given day.
4- student can able to tell days of the week frequently.

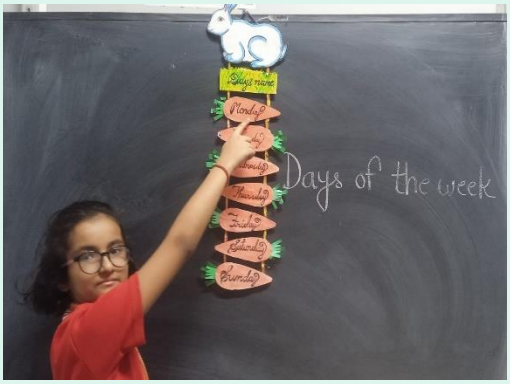

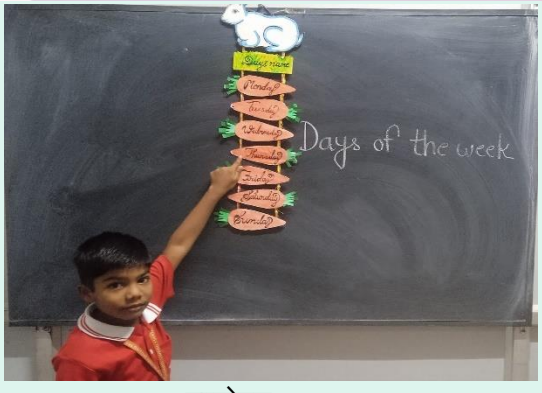

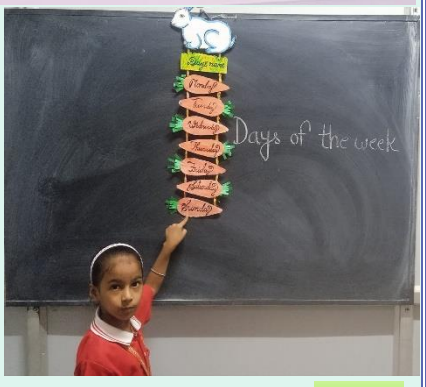

CLASS- IInd

Activity-1

Objective - Students will be able to learn about different types of animal, such as pets, wild animals, aquatic animals and their habitats etc.
Step 1 - We read the lesson wonderland of animals.
Step 2 - I went to the zoo with the students which is on our school campus.
Step 3 - Each and every student watch the zoo carefully and attains knowledge about animals.
Conclusion - Student learn about pet animals, aquatic animals, wild animals and their habitats.

Activity- 2

Topic – Preposition
Objective - Student will be able to learn about proper use of "Preposition".
Teaching Aid - Black board, Chalk, Duster, Book, Table, Bottle, Cardboard Box, Bench etc.
Preposition - Preposition is a word that shows relationship between two or more than two nouns or pronouns. Eg:- on, under, In, into, around, between, in front, after, before etc.
Conclusion - The student learned to use prepositions in the proper place.

Student were on the bench

Aditya is behind the door

The bottle in the box

Two girls under the table

Activity- 1

CLASS- IIIrd

Topic – Articles

In the English subject class the students were made to do Article related activities, In which all the students participated with enthusiasm.

Learning objectives of articles – To help students understand the meaning of articles .

- **To enable students to differentiate between the types of articles.**
- **To enable the students to use articles correctly in their daily life.**
- **To draw links between definite and indefinite articles .**
- **To justify the right use of articles as determiners.**
- **To enable the students to identify articles in sentences .**

Article – An article is a demonstrative adjective .

Kinds of Articles – Basically articles are of two kinds-

1.Definite Article – ('The' is definite article)

2.Indefinite Article – ('A' and 'An' are indefinite articles).

Activity- 2

Topic – Singular and Plural nouns

All students participated in the singular and plural noun activity conducted in the class.

General objective of Singular and plural noun activity work –

- **Students will be able to identify the singular and plural noun .**
- **Students will be able to classify the singular and plural noun .**
- **Students will be able to gain an understanding of the terms singular and plural.**
- **Students will be able to improve their language skills, understand subject.**

Singular noun : A singular noun refers to one person, place, thing . Such as "bird","tree","book .

Plural noun : A plural noun refers to more than one person, place or thing . Such as " birds " , " trees " , " books " or " boxes " .

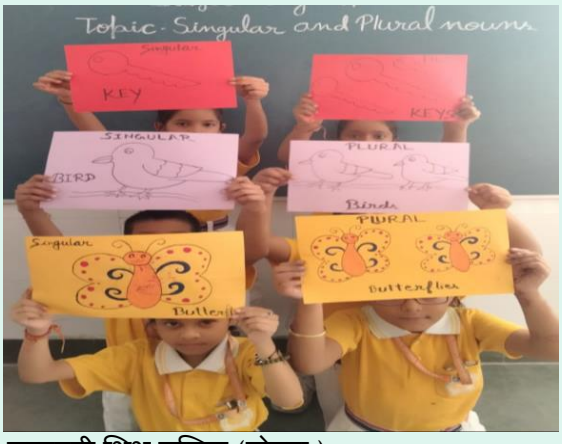

Activity- 1

CLASS- IVth

Topic – Parts of speech

OBJECTIVE - Students will learn about some parts of speech with examples.

TEACHING AIDS -blackboard, chalk, flash cards, disposal glasses etc.

PARTS OF SPEECH - words are divided into different classes or categories according to their use in the sense these are called parts of speech. The part of speech indicates how the word functions in meaning as well as grammatically within the sentence.

Step -1 students will take the sticks of different examples of part of speech.

Step -2 students will identify the name of parts of speech of the examples.

Step -3 one by one students will put the sticks into the correct glass of parts of speech as shown in the pictures.

CONCLUSION - through this activity the students have successfully learned about some parts of speech. They can identify the example of parts of speech and tell their name easily and improve their vocabulary also.

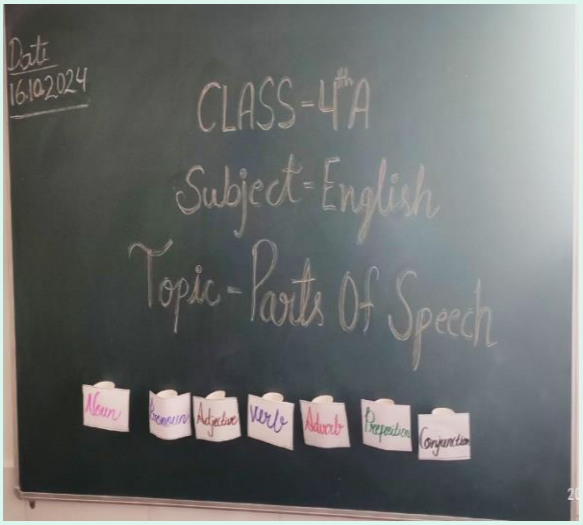

Activity- 2

Topic -Word – Antonyms OBJECTIVE

Antonyms OBJECTIVE - student will learn different word and antonyms to improve their vocabulary.

TEACHING AIDS – Blackboard,chalk, A wheel of a paper of word antonyms and some flash cards.

ANTONYMS - antonyms are word opposite in meaning to each other.The word" antonym" comes from Greek word anti, meaning "opposite " and onym, which comes from the Greek onoma, meaning "name". So "antonym" literally means "opposite- name ".

STEP-1 Students will learn about some word antonym with the help of a paper wheel.

STEP -2 Two students will come search and pick the pair of word antonym and paste on blackboard in right column . As shown in picture .

CONCLUSION – Through this activity the students have successfully learnt about some words antonyms and improve their vocabulary.

CLASS- Vth

Activity- 1 TOPIC-ADJECTIVE

OBJECTIVE

Students will learn the use of adjectives for different nouns .

TEACHING AID

Blackboard,Chalk,Flashcards and different pictures.

Step 1

Students will pick the appropriate Flash cards of adjective for the different objects as popcorn, girl,flower ,girl and apple

Step 2- Students will paste the Flash cards in front of the objects.

CONCLUSION

Through this activity, the students have successfully learned about different adjectives. They can now identify and use descriptive adjectives to talk about qualities.They have improved their vocabulary.

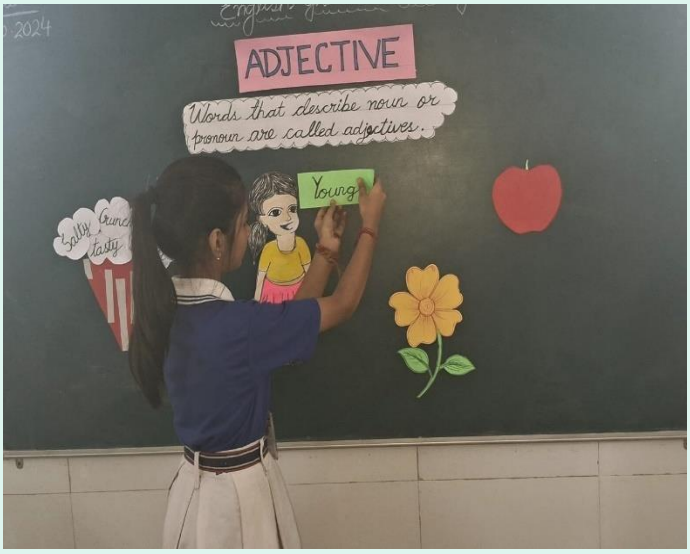

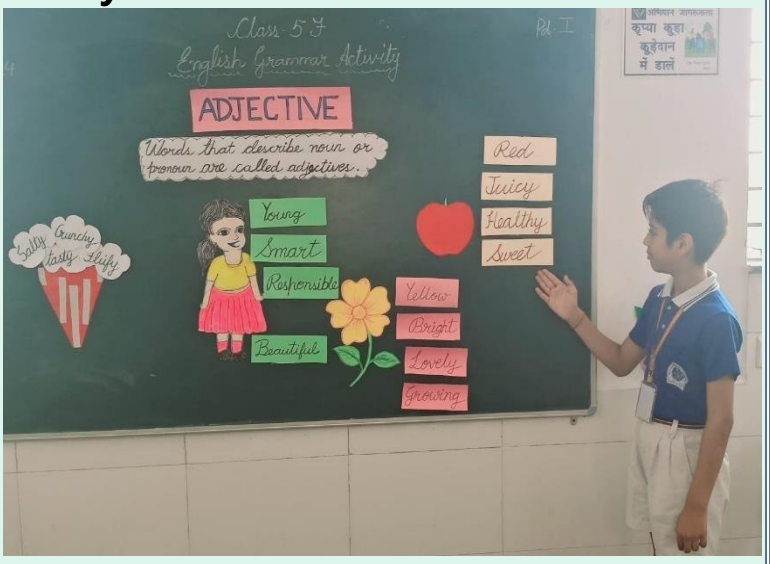

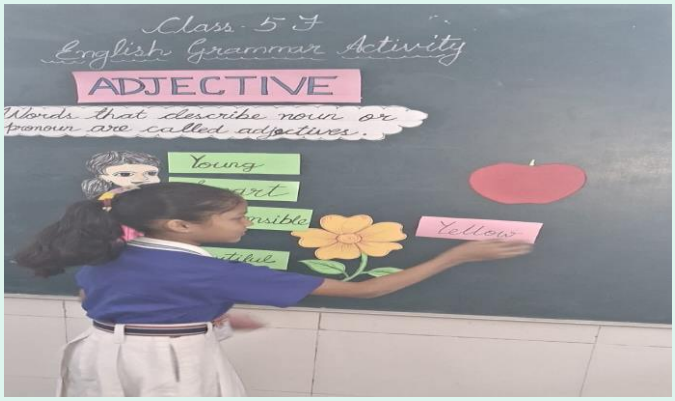

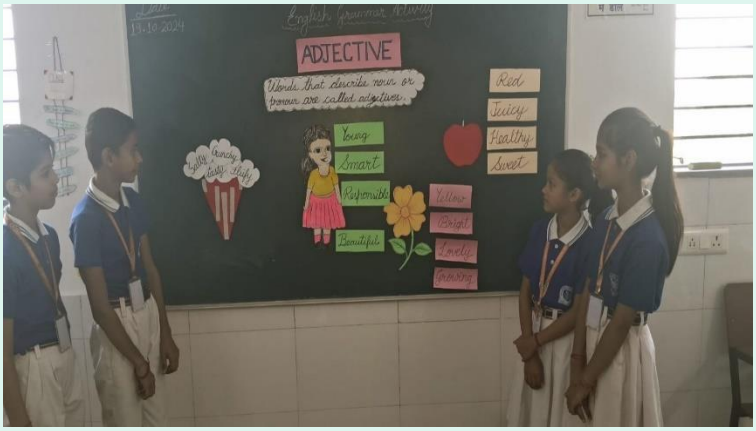

TOPIC- MARKS

Activity- 2

OBJECTIVE

Students will learn the use of PUNCTUATION MARKS.

TEACHING AID

Blackboard,Chalk,Flashcards .

ADJECTIVE

Punctuation marks are symbols that help us understand and organize sentences better. They show us where to pause, stop, or add excitement when reading or writing.

Ex question mark(?), full stop(.), exclamation mark(!), semicolon(;), inverted commas(‘’) and comma(,)

- Riya asked, "Can you believe how hot it is today?" She added, "It's 40 degrees outside!" We decided to stay indoors; the heat was unbearable.

CONCLUSION

The students have effectively learned about different punctuation marks through engaging activities. They can now identify and use question marks, full stops, exclamation marks, commas, semicolons, and inverted comma, enhancing their writing by making it clearer and more expressive.

लेख (उत्सव,जयन्ती एवं दिवस)

दीपावली

दीपावली स्वयं के अंदर के अंधकार को मिटाकर समुचित संसार को प्रकाशमय बनाने का त्यौहार है। दीपावली अर्थात "प्रकाश का पर्व" दीपावली अंधकार पर प्रकाश ,अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। दीपावली पर्व कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस महापर्व को मनाने के पीछे कई मान्यताएं हैं।

सबसे प्रमुख मान्यता भगवान राम के वन से 14 वर्ष वनवास के पश्चात आगमन की है। दीपावली के दिन ही स्वामी रामतीर्थ व स्वामी दयानंद सरस्वती को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। **दीपावली पर्व पांच दिवसीय त्यौहार है** प्रथम दिवस धनतेरस पर कुबेर जी का पूजन किया जाता है।

द्वितीय दिवस को नरक चतुर्थी अर्थात छोटी दिवाली के रूप में मनाया जाता है। तृतीय दिवस पर्व का मुख्य दिन दीपावली होता है। इस दिन महालक्ष्मी और भगवान गणेश जी की पूजा की जाती है। चतुर्थ दिवस पर भगवान गोवर्धन की पूजा की जाती है ,तथा पंचम व अंतिम दिवस पर भाई दूज का पर्व मनाया जाता है। **प्रदूषण मुक्त दीपावली-** दीपावली पुराने समय से पटाखे और आतिशबाजी से मनाया जाता रहा है। किंतु अब लोग पर्व मनाने के लिए पर्यावरण अनुकूल तरीकों का उपयोग करने के बारे में अधिक जागरूक हैं पर्यावरण अनुकूल दिवाली जिसे हरित दिवाली के रूप में भी जाना जाता है।

पर्यावरण अनुकूल आतिशबाजी जो कम प्रदूषण और शोर पैदा करती है ,लोकप्रियता हासिल कर रही है। प्राकृतिक सामग्रियों और जैविक बायोडिग्रेडेबल सजावट से बने रंगोली डिजाइन स्वछता पूर्वक पर्व में योगदान करते हैं। पर्यावरण अनुकूल दिवाली का उद्देश्य है पर्यावरण को संरक्षित करना। वायु और ध्वनि प्रदूषण को कम करना और इस पावन त्योहार को मनाने के अधिक जिम्मेदार और सामंजस्य पूर्ण तरीके को बढ़ावा देना है। दीपावली का पर्व हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। दीपावली का पर्व सांस्कृतिक और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक है। इसलिए दीपावली पर प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा देने का प्रयत्न करना चाहिए ।

विन्तेश सिंह (आचार्या)

स०शि०म०,नोएडा

गोवर्धन पूजा

कार्तिक मास की , शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को गोवर्धन पूजा मनाई जाती है। दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है लोग इसे **अन्नकूट** के नाम से भी जानते हैं। इस त्यौहार का भारतीय लोक जीवन में बहुत महत्व है। इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है इस पर्व की अपनी मान्यता और लोक कथा है गोवर्धन पूजा में गोधन अर्थात गायों की पूजा की जाती है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान इंद्र, भगवान कृष्ण के प्रति लोगों की भक्ति से नाराज थे। क्रोधित होकर भगवान ने भारी बारिश से तबाही मचाई। तब भगवान कृष्ण ने लोगों को बाढ़ से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत अपनी छोटी उंगली पर उठा लिया । गोप, गोपीकाएं उसकी छाया में सुखपूर्वक 7 दिन तक रहे। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा और प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव बनाने की आज्ञा दी।

इस दिन घर के मुख्य द्वार पर गाय के गोबर से गोवर्धन की आकृति बनाकर भगवान श्री कृष्ण की पूजा की जाती है। गोवर्धन पूजा कुछ जगहों पर सुबह की जाती है वहीं कुछ जगह पर इस पूजा के लिए प्रदोष काल को शुभ माना जाता है इस दिन भगवान के निमित्त 56 भोग बनाया जाता है।

कहते हैं कि अन्नकूट महोत्सव मनाने से आरोग्य की प्राप्ति होती है अन्नकूट महोत्सव इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इस दिन नई अनाज की शुरूआत भगवान को भोग लगाकर की जाती है।

दीपिका शर्मा (आचार्या)

स०शि०म०,नोएडा

गुरु नानक जयन्ती

सिख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक देव, गहन आध्यात्मिक महत्व और ऐतिहासिक महत्व के व्यक्ति हैं। उनके जीवन और शिक्षाओं ने भारतीय उपमहाद्वीप और उससे परे के धार्मिक और सामाजिक ताने-बाने पर एक अमिट छाप छोड़ी है। जैसे ही हम उनके जीवन और विरासत का पता लगाने के लिए यात्रा पर निकलते हैं, हम एक ऐसे व्यक्ति की प्रेरक कहानी के बारे में जान पाते हैं, जिसकी आध्यात्मिक खोज के कारण एक समावेशी विश्वास का जन्म हुआ।

गुरु नानक जयंती का जन्म कार्तिक पूर्णिमा के दिन 1469 में राएभोए के तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। गुरु नानक के जन्म स्थान को ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। गुरु नानक की जन्म स्थली वर्तमान में भारतीय सीमा के उस पार पाकिस्तान में है। उनकी माता का नाम तृप्ता और पिता का नाम लाला कल्याण राय (मेहता कालू) था। उनके पिता तलवंडी गांव में पटवारी थे। गुरु नानक बचपन से ही बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि के थे। वे तार्किक बातें करते थे। लोग उनकी बातों से बड़े प्रभावित होते थे। गुरु नानक ने अपने जीवन में खूब यात्राएं कीं और यह संदेश दिया कि ईश्वर एक है।

अपने पूरे जीवन में, गुरु नानक ने अपने दिव्य संदेश को साझा करने के लिए लंबी दूरी तय करते हुए लंबी यात्राएं कीं। उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव और रीति-रिवाजों को खारिज कर दिया, समानता, सामाजिक न्याय और परमात्मा के साथ हार्दिक संबंध के महत्व की वकालत की। गुरु ग्रंथ साहिब में कैद उनकी शिक्षाएं ज्ञान का एक कालातीत स्रोत बनी हुई हैं, जो लाखों सिखों का मार्गदर्शन करती हैं और अनगिनत अन्य लोगों को करुणा, सेवा और आध्यात्मिक भक्ति का जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं।

सिखों के पहले गुरु और सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी को सिख धर्म में सबसे विशिष्ट स्थान मिला है। गुरु नानक जयंती के द्वारा 15वीं शताब्दी के अंत में सिख धर्म की स्थापना की गई। सभी श्रद्धा तथा उल्लास के साथ गुरु नानक जयंती का पर्व मनाते हैं। इस दिन सिख समुदाय के लोग गुरुद्वारों में नगर कीर्तन निकालते हैं और सुबह-सुबह प्रभातफेरी होती है। सिखों के 10 गुरुओं की श्रृंखला में गुरु नानक जी सबसे पहले हैं।

कार्तिक पूर्णिमा एक प्रसिद्ध उत्सव है जिसे 'त्रिपुरी पूर्णिमा' या 'त्रिपुरारी पूर्णिमा' के रूप में भी जाना जाता है, जो त्रिपुरास राक्षस पर भगवान शिव की विजय का जश्न है। जब कार्तिक पूर्णिमा 'क्रितिका' नक्षत्र में आती है, इसे महा कार्तिक कहा जाता है, जिसका अधिक महत्व है। कार्तिक पूर्णिमा भी 'देव दीपावली' के रूप में मनाई जाती है। कार्तिक पूर्णिमा का हिंदुओं, सिखों और जैनों के लिए बहुत महत्व है। यह गुरु नानक जयंती के सिख उत्सव और जैनों के धार्मिक दिवस के साथ मेल खाता है, जो शतरंजजे पहाड़ियों पर स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर में श्री शत्रुन्ज तीर्थ यात्रा से भगवान आदीनाथ की पूजा करने के लिए माना जाता है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन श्री गुरु नानक जी का जन्मदिन भी मनाया जाता है। गुरू नानक जी की जयंती या गुरुपूरब /गुरु पर्व सिख समुदाय में मनाया जाने वाला सबसे सम्मानित दिन है। गुरू नानक जी की जयंती, गुरु नानक जी के जन्म को स्मरण करते हैं। इसे गुरुपूरब/गुरु पर्व के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है 'गुरुओं का उत्सव'। गुरु नानक जी निहित नैतिकता, कड़ी मेहनत और सच्चाई का संदेश देते हैं। यह दिन महान आस्था और सामूहिक भावना और प्रयास के साथ, पूरे विश्व में उत्साह के साथ मनाया जाता है। गुरु नानक जी का जीवन प्रेम, ज्ञान और वीरता से भरा था।

निधि शुक्ला (आचार्या)

स०शि०म०,नोएडा

महारानी लक्ष्मीबाई

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

इन पंक्तियों से लगभग हर भारतीय परिचित है। रानी लक्ष्मी बाई, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक अद्वितीय वीरांगना थीं, जो झाँसी की रानी के रूप में प्रसिद्ध हुईं। उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प और निष्ठापूर्ण साहस के साथ ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया।

परिचय : महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं।

विवाह : सन् 1838 में गंगाधर राव को झांसी का राजा घोषित किया गया। वे विधुर थे। सन् 1850 में मनुबाई से उनका विवाह हुआ। सन् 1851 में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। झांसी के कोने-कोने में आनंद की लहर प्रवाहित हुई, लेकिन चार माह पश्चात उस बालक का निधन हो गया।

सारी झांसी शोक सागर में निमग्न हो गई। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवंबर 1853 को चल बसे।

संघर्ष : 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तक पुत्र **दामोदर राव** की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंगरेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पोलेटिकल एजेंट की सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी'। 7 मार्च 1854 को झांसी पर अंगरेजों का अधिकार हुआ। झांसी की रानी ने पेंशन अस्वीकृत कर दी व नगर के राजमहल में निवास करने लगीं।

यहीं से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंगरेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे-महाराजे असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी।

1857 की क्रांति के समय, रानी लक्ष्मी बाई ने झाँसी की संघर्षशील महिला सेना के साथ ब्रिटिश शासनकाल के खिलाफ उत्कृष्ट योगदान दिया। उन्होंने अपने प्रशासकीय कौशल और लड़ाई के दृष्टिकोण से अपनी प्रजा की रक्षा की और स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रानी लक्ष्मी बाई का बलिदान हमें साहस, समर्पण और देशभक्ति की प्रेरणा प्रदान करता है। उनकी अद्वितीय पराक्रम, स्वाधीनता के प्रति उनके अटल समर्पण का प्रतीक है।

अंजली शर्मा (आचार्या)

स०शि०म०,नोएडा

भारतीय संविधान दिवस

26 नवंबर को हर साल हम संविधान दिवस के रूप में मनाते हैं। यह दिन हमारे देश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जब हमारे देश का संविधान बनाया गया था। भारत का संविधान, एक जीवंत दस्तावेज़, हमारे देश की आत्मा है। यह हमें समानता, न्याय, स्वतंत्रता और समाजवाद के मूल सिद्धांतों पर आधारित एक समाज बनाने का मार्ग दिखाता है। आज, हमें अपने अधिकारों को समझना चाहिए तथा अपनी जिम्मेदारियों को निभाना चाहिए, समाज में समानता और न्याय की स्थापना में योगदान देना चाहिए। इस दिन हम अपने देश के लिए गर्व महसूस करते है और अपने संविधान के लिए सम्मान प्रकट करते हैं। भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य है भारत के नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार है । भारत का संविधान न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका के बीच शक्तियों का विभाजन करता है।

संविधान दिवस का महत्व :

1. संविधान की महत्ता को समझने के लिए।
2. भारत के संविधान के मूल्यों और आदर्शों को मनाने के लिए।
3. देश के नागरिकों को संविधान के प्रति जागरूक करने के लिए।
4. संविधान के माध्यम से देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए।

संविधान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम :

1. राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा संबोधन।
2. संविधान की प्रति को पढ़ना और उसके मूल्यों को समझना।
3. विद्यालयों और कॉलेजों में संविधान संबंधी कार्यक्रम आयोजित करना।
4. सामुदायिक केंद्रों में संविधान के बारे में जानकारी देना।
5. संविधान के माध्यम से देश की एकता और अखंडता को मजबूत करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना।

संविधान दिवस के उद्देश्य :

1. संविधान के मूल्यों को समझना और उनका पालन करना।
2. देश के नागरिकों को संविधान के प्रति जागरूक करना।
3. संविधान के माध्यम से देश की एकता और अखंडता को मजबूत करना।

संविधान की शक्ति :

1. समानता का अधिकार
2. न्याय की गारंटी
3. स्वतंत्रता का अधिकार

यह दिन हमें अपने देश के प्रति जिम्मेदारी की याद दिलाता है। हमें अपने संविधान के मूल्यों को अपनाना चाहिए और अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए और हमे अपने देश के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

महेन्द्र पाल (आचार्य)

स०शि०म०,नोएडा

जगदीश चन्द्र बसु

जगदीश चंद्र बोस को रेडियो विज्ञान और बंगाली विज्ञान कथा के जनक में से एक माना जाता है। उन्होंने रेडियो और माइक्रोवेव ऑप्टिक्स की जांच में योगदान दिया।जगदीश चंद्र बोस एक महान भारतीय वैज्ञानिक थे। उन्होंने अपने जीवन में शुरुआती उड़ान भरी और कई विद्युत उपकरणों का आविष्कार किया। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लांट साइंस और रेडियो भौतिकी में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बोस को बचपन से ही विज्ञान में रुचि थी। उन्होंने मिमोसा पुडिका पर प्रयोग किए और दिखाया कि छूने या हिलाने पर यह अपनी पत्तियों को बंद कर लेता है। उनके प्रयोग 1887 में प्रकाशित हुए। उन्होंने यह भी बताया कि यह क्रिया तब भी होती है जब पत्ती अपनी जड़ों से शारीरिक रूप से जुड़ी नहीं होती (जिसे 'रूटलेस' कहा जाता है)। इससे यह साबित हुआ कि पौधों में जानवरों की तरह एक तंत्रिका तंत्र होता है।

सर जगदीश चंद्र बोस (1858-1937) का जन्म 30 नवंबर, 1858 को मुंशीगंज (अब बांग्लादेश में) में हुआ था। उनके पिता भगवंत चंद्र बोस एक डिप्टी मजिस्ट्रेट थे और उनकी मां प्रसन्ना कुमारी देवी एक जमींदार परिवार से थीं। जगदीश के पिता की मृत्यु तब हुई जब वह केवल दो वर्ष के थे, इसलिए वह अपने चाचा के साथ रहे।
जगदीश चंद्र बोस एक वैज्ञानिक और चिकित्सक थे, जिन्होंने प्लांट फिजियोलॉजी में बहुमूल्य योगदान दिया, और विद्युत चुम्बकीय विकिरण पर उनके काम ने क्रेस्कोग्राफ के विकास को जन्म दिया।
वे एक लेखक और दार्शनिक भी थे। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता (तब कलकत्ता मेडिकल कॉलेज के रूप में जाना जाता था) में अध्ययन किया, और प्राकृतिक विज्ञान (1879) में सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की, भौतिकी में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए गवर्नर जनरल का पदक जीता। स्नातक होने के बाद, वे 1887 तक प्रेसीडेंसी कॉलेज में सहायक प्रोफेसर रहे, जब वे अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए इंग्लैंड चले गए। 1890 में वे प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बन गए।
जगदीश चंद्र बोस एक बंगाली वैज्ञानिक, वनस्पतिशास्त्री और भौतिकशास्त्री थे। उन्हें रेडियो विज्ञान का जनक माना जाता है और वे 1894 में रेडियो संकेतों का पता लगाने के लिए सेमीकंडक्टर जंक्शन का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति थे। सर जगदीश चंद्र बोस एक वैज्ञानिक, जीवविज्ञानी और वनस्पतिशास्त्री थे जिन्होंने कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक योगदान दिए। उन्होंने विभिन्न उद्देश्यों के लिए कई उपकरण बनाए, जिनमें क्रेस्कोग्राफ भी शामिल है, जो विभिन्न उत्तेजनाओं के प्रति पौधों की प्रतिक्रिया को मापने वाला एक उपकरण है।

1895 में, उन्होंने अपने निष्कर्षों पर एक पेपर बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी को भेजा। विज्ञान कथा के शुरुआती लेखक के रूप में जगदीश चंद्र बोस का योगदान बहुत बड़ा है। उन्होंने 1893 से वायरलेस टेलीग्राफी पर काम किया। उनका मानना था कि विद्युत चुम्बकीय तरंगें प्रकाश की गति से अंतरिक्ष में यात्रा कर सकती हैं। उनका पेपर "ऑन द इलेक्ट्रिकल रिस्पॉन्स ऑफ़ प्लांट्स" 1895 में जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक इंस्ट्रूमेंट्स में प्रकाशित हुआ था, और इसमें विद्युत उत्तेजनाओं का उपयोग करके पौधों पर उनके कुछ प्रयोगों पर चर्चा की गई थी।
जगदीश चंद्र बोस ने अपने प्रयोग के जरिए बताया था कि पौधों में जान होती है. उन्हें भी दर्द महसूस होता है. इंसानों की तरह उन पर भी तापमान और रोशनी का असर होता है। विज्ञान के क्षेत्र में कई दिलचस्प खोज करने के लिए जगदीश चंद्र बोस को 1917 में नाइट (Knight) की उपाधि से सम्मानित किया गया. 23 नवम्बर 1937 को 79 वर्ष की उम्र में इस महान वैज्ञानिक का निधन हो गया.

नेहा चौधरी (आचार्या)
स०शि०म०,नोएडा

केन्द्रीय अधिकारी प्रवास

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबंध सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में त्रिदिवसीय (20 से 22 अक्टूबर 2024) केंद्रीय अधिकारी प्रवास की दृष्टि से विद्या भारती के सह संगठन मंत्री श्री यतींद्र जी का प्रवास रहा।

मातृ भारती व बाल सुरक्षा समिति बैठक

विद्यालय में दिनांक 18 व 19 अक्टूबर 2024 को मातृ भारती समिति की प्रथम बैठक व बाल सुरक्षा बैठक आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों की सहभागिता रही।

स्वर्णप्राशन

विद्यालय में दिनांक- 24-10-24 को पुष्य नक्षत्र में शिशु वाटिका के भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन कराते अभिभावक व आचार्य बहिनें.....

प्रान्तीय प्रधानाचार्य बैठक

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
ऋग्वेद
अथर्ववेद
अग्नि ऋषि
आदित्य ऋषि

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सेक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
वायु ऋषि
अंगिरा ऋषि
आदित्य ऋषि

विद्या भारती के
चार आयाम

TYPE OF CROPS
ROOTS

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक 27 व 28 अक्टूबर 2024 को प्रधानाचार्य समीक्षा बैठक में प्रदेश संगठन मंत्री श्री प्रदीप जी, प्रदेश मंत्री प्रदीप भारद्वाज जी व क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री डोमेश्वर साहू जी सहित अनेक पदाधिकारियों व उपस्थित रहे 80 प्रधानाचार्यों से सम्बन्धित छायाचित्र.....

भगिनी निवेदिता जयन्ती

सेवा भारती नोएडा महानगर में मनाई भगिनी निवेदिता जन्म जयंती

स्वास्तिक सहारा ब्यूरो

नोएडा। सेक्टर 12 सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय परिसर में सेवा भारती नोएडा महानगर द्वारा भगिनी निवेदिता जन्म जयंती समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सेवा भारती की प्रांत सह किशोरी विकास प्रमुख सुरभि सिंह, प्रांत सामाजिक आयाम प्रमुख अनिता सिंह, सेवा भारती नोएडा महानगर अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश गुप्ता, सेवा भारती महानगर नोएडा के मंत्री अमृतपाल सिंगला, सरस्वती शिशु मंदिर प्रधानाचार्य प्रकाश वीर एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सेवा प्रमुख सुन्दर एवं अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर किशोरियों ने बहुत ही सुंदर नाटिका के द्वारा भगिनी निवेदिता के जीवन से परिचय कराया। सेवा भारती की प्रांत सह किशोरी विकास प्रमुख सुरभि सिंह ने बताया कि 28 अक्टूबर 1867 को जन्मीं निवेदिता का वास्तविक नाम 'मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल' था। एक अंग्रेजी-आइरिश सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक, शिक्षक एवं स्वामी विवेकानन्द की शिष्या- मार्गरेट ने 30 साल की उम्र में भारत को ही अपना घर बना लिया, मात्र 10 साल की उम्र में अपने पिता को खोने के बाद उनका जीवन गरीबी में बीता। उनकी शिक्षा इंग्लैंड के एक चैरिटेबल बोर्डिंग स्कूल में हुई।

सिर्फ 17 साल की उम्र में अपनी पढाई पूरी करने के बाद उन्होंने शिक्षक की नौकरी कर ली। 25 साल की उम्र में उन्होंने अपना भी एक स्कूल खोला और वह उस समय शिक्षा में अलग-अलग प्रयोग करने के लिए मशहूर थीं। इसके अलावा वे जि़न्दगी का सच्चा सार जानना और समझना चाहती थीं और इसीलिए उन्हें महान विचारकों और सुधारकों की संगत बेहद पसंद थी। साल 1895 में मार्गरेट के जीवन में सबसे बड़ा बदलाव आया, उन्हें एक निजी संगठन द्वारा एक 'हिन्दू योगी' का भाषण सुनने के लिए बुलाया गया था। यह योगी कोई और नहीं बल्कि स्वामी विवेकानंद थे। वह स्वामी जी के भाषण से इतना प्रभावित हुई की उन्होंने भारत आने का फैसला कर लिया। जब विवेकानंद मार्गरेट से मिले तो उन्हें भी समझ में आ गया कि मार्गरेट भारतीय महिलाओं के उत्थान में योगदान कर सकती हैं। मार्गरेट ने उसी पल यह मान लिया कि भारत ही उनकी कर्मभूमि है। इसके तीन साल बाद, जनवरी, 1898 में मार्गरेट भारत आ गयीं। स्वामी विवेकानंद ने उनको 25 मार्च 1898 को दीक्षा देकर भगवान बुद्ध के करुणा के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। दीक्षा के समय स्वामी विवेकानंद ने उन्हें नया नाम 'निवेदिता' दिया, जिसका अर्थ है 'समर्पित' और बाद में वह पूरे देश में इसी नाम से विख्यात हुईं। सेवा भारती नोएडा महानगर के मंत्री अमृत पाल सिंगला ने बताया कि निवेदिता दीक्षा प्राप्त करने के बाद कोलकाता के बागबाजार में बस गयीं थी। यहाँ पर उन्होंने लड़कियों के लिए एक स्कूल शुरू किया। जहाँ पर वह लडकियों के माता-पिता को उन्हें पढ़ने भेजने के लिए प्रेरित करती थी। निवेदिता स्कूल का उद्घाटन रामकृष्ण परमहंस की पत्नी मां शारदा ने किया था। निवेदिता ने माँ शारदा के साथ बहुत समय बिताया।

उस समय बाल-विवाह की प्रथा प्रचलित थी और स्त्रियों के अधिकारों के बारे में तो कोई बात ही नहीं करता था। पर निवेदिता को पता था कि केवल शिक्षा ही इन कुरूतियों से लड़ने में मददगार हो सकती है। उन्होंने भारत मे स्त्री शिक्षा, और भारतीय संस्कृति के उत्थान और कल्याण के लिए कार्य किया. शिक्षा, स्वास्थ्य, राष्ट्रीयता पर बहुत योगदान दिया। कार्यक्रम में केंद्र संचालिकाओं के साथ साथ लगभग 200 किशोरियों उपस्थित रही।

साक्षात्कार

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के "बाल मन की उड़ान" न्यूज़ चैनल में आज विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के सह-संगठन मंत्री श्रीमान यतींद्र जी का आगमन हुआ। न्यूज़ चैनल के बाल संवाददाता अनामिका व आराध्या के साथ उनसे हुई वार्ता के मुख्य अंश.....

श्रीमान जी आप विद्या भारती में कब से और किन परिस्थितियों में जुड़े हैं ?

हम संघ के प्रचारक हैं 1974 से हम संघ के प्रचारक हैं 1974 से 1992 तक हम संघ के कार्य में रहे हैं। 1992 से हमारा विद्या भारती के कार्य में है।

आपको विद्या भारती में जुड़ने की प्रेरणा किनसे मिली है ?

किसी से नहीं। हमको संगठन ने कहा यह काम करोगे? हमने कहा बिल्कुल करेंगे। हमें प्रेरणा किसी से नहीं मिली, हमको आदेश दिया गया। संघ के कार्यकर्ताओं को कोई आदेश करता है कि तुमको इस क्षेत्र में कार्य करना है। हमको कहा गया कि तुमको शिक्षा की क्षेत्र में कार्य करना है।

उत्तर प्रदेश में विद्या भारती के कार्य विस्तार कैसे-कैसे हुआ ?

विद्या भारती नाम का संगठन तो 1978 में शुरू हुआ। लेकिन योजना 1952 में गोरखपुर से शुरू हुई। फिर धीरे-धीरे 52 से शिशु मंदिर बढ़े। दूसरा शिशु मंदिर मध्य प्रदेश के यह ललितपुर नाम के जिले में मदनपुर गांव से प्रारंभ हुआ। फिर रामपुर में शुरू हुआ, फिर हापुड़ में शुरू हुआ, फिर वृंदावन में और मथुरा में एक-दो विद्यालय शुरू हुए। ऐसे जब काम बढ़ गया। पंचम तक के ही विद्यालय शुरू हो गए। सरस्वती शिशु मंदिरों को सँभालने के लिए एक समिति का संगठन किया गया। वह देश की पहली समिति है उसका नाम है शिशु शिक्षा प्रबंधन समिति। उसने विद्यालय का प्रबंध उत्तर प्रदेश में संभाला, और धीरे-धीरे समाज में शिशु मंदिरों का काम बढ़ा तो फिर बच्चों की मांग आने लगी, अभिभावकों की मांग आने लगी, आगे की कक्षाओं की मांग आने लगी। तो फिर विद्या मंदिर शुरू हुए।

यात्रा के काल क्रम में कोई प्रेरणादायक प्रसंग हो तो उनके विषय में बताइए-

विद्या भारती के बारे में यह है कि, जब विद्या भारती प्रारंभ हुई ,आपातकाल तक देश में लगभग 600 संस्थाएं हो गई थी। तो यह विचार आया देश भर का कोई एक शिक्षा का संगठन खड़ा किया जाए जो देश की शिक्षा को दिशा दे, देश की स्वतंत्र भारत की शिक्षा को प्रेरणा दें, भारतीय विचारों को लेकर चले। उस समय एक शिविर का निर्णय हुआ।

आपातकाल हटने के बाद। सुना है इमरजेंसी आप लोगों ने ?

जी, हाँ श्रीमान जी आपातकाल।

हाँ तो इमरजेंसी खतरनाक थी। लोकतंत्र की हत्या हो गई थी। न्यायपालिका में सब परिवर्तन हो गए। संविधान में परिवर्तन हो गए। तानाशाही शासन ने लोगों को जेल में डाल दिया। फिर जब आपातकालीन हटा तो देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था निर्माण हुई, तो फिर तय हुआ कि बच्चों का एक शिविर किया जाए। वह शिविर डरते-डरते तय हुआ तो आप जैसे ही उम्र के बच्चे पढ़ने के लिए आते थे, बड़े बच्चे भी आते थे जैसे भाऊराव विद्यालय के बड़े बच्चे।

विद्या भारती में लंबे समय से कार्य करते आपको कैसा अनुभव हो रहा है ?

अच्छा अनुभव हो रहा है।

बस एक अंतिम प्रश्न विद्या भारती से जुड़े अनेक कार्यकर्ताओं तथा हम भैया/ बहिनों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

हम यह संदेश देना चाहेंगे कि विद्या भारती जिस उद्देश्य को लेकर चली है जिन विशेषताओं को लेकर चली है वह भारतीय संस्कृति के आधार पर विशेषताएं शिक्षा दर्शन भारतीय मनोविज्ञान के आधार पर मनोवैज्ञानिक शिक्षा दर्शन इसको केंद्र में रखकर शिक्षा का काम करना और शिक्षा को अंग्रेजी से मुक्त करना यह जिस दिन हो जाएगा, तो देश अपने ऊपर गौरव करने लगेगा सभी भैया / बहिनों व सभी आचार्यों अपनी संस्कृति पर, परंपराओं पर, अपने धर्म पर, अपने राष्ट्र पर गौरव का भाव अनुभव करेंगे। जो स्वतंत्रता के बाद थोड़ा कम हुआ है।

या सब अपनी पूर्ण भूमिका निभाएं। और सावधानी से काम करने की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा को, भारतीय धर्म को लेकर हमारा संपूर्ण विद्यालय उसी प्रकार की प्रेरणा शिक्षण जगत को दें। जितने भी पब्लिक स्कूल, शासकीय स्कूल चल रहे हैं, वह सब विद्या भारती की प्रेरणा से चलें। इस प्रकार का परिवर्तन अपने विद्यालय से देखें ऐसा व्यवहार ऐसा कर्तव्य ऐसा ज्ञान, यह हमारे भैया / बहिन और हमारे आचार्य करें।

आपसे हुई वार्ता के लिए तथा आपने अपना बहुमूल्य समय दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

नमस्ते।

दीपावली कार्यक्रम

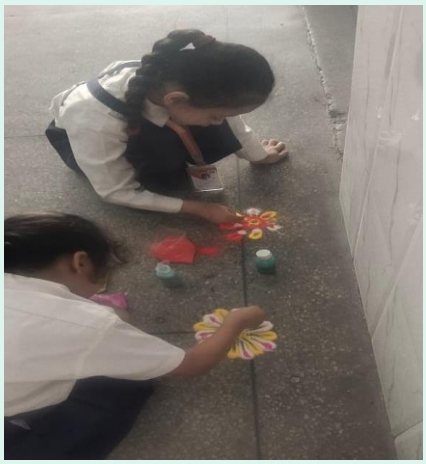

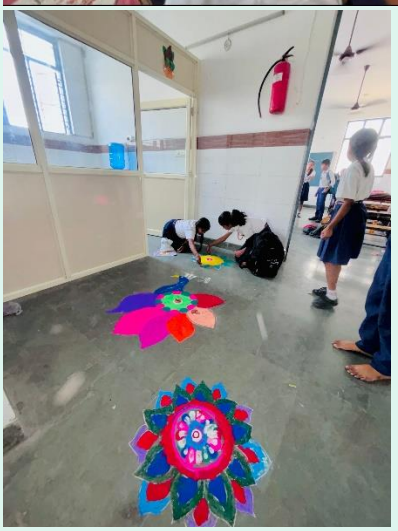

दिनांक-29.10.2024 को विद्यालय में दीपावली के अवसर पर रंगोली बनाकर भैया/ बहनों ने अपना पावन त्यौहार मनाया।

सरदार बल्लभ भाई पटेल जयन्ती

दिनांक-29.10.2024 को विद्यालय में सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयन्ती के अवसर पर आचार्य बहन रजनी बिष्ट ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में बताते हुए.....

जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम

दिनांक-29.10.2024 को विद्यालय में प्रतिमाह की तरह अक्टूबर माह में जन्मे भैया/बहिनों के उज्जवल भविष्य हेतु हवन- पूजन करते यजमान श्रीमान जीवन राम जी व श्रीमती अमृता देवी जी तथा विद्यालय की आचार्य दीदी वह अभिभावक व बन्धु/भगिनी..

बताओ तो जाने

त्योहारों के नाम खोजें

दिशा संकेत : →↓↘

गु	रु	पू	र्णि	मा	ओ	ण	म	ग	ण	गौ	र
रु	द	श	ह	रा	ई	द	क	र	वा	चौ	थ
ना	मु	ह	र्र	म	हा	वी	र	ज	यं	ती	या
न	छ	ठ	गो	न	हो	बि	सं	लो	भै	अ	त्रा
क	ती	दी	पा	व	ली	हू	क्रां	ह	या	क्ष	दे
ज	ज	न्मा	ष्ट	मी	र्द्ध	ध	ति	ड़ी	दू	य	वो
यं	ग	र	क्षा	ब	न्ध	न	व	रो	ज	तृ	त्था
ती	णे	बु	बै	सा	खी	ते	पू	पों	ना	ती	न
दु	श	द्ध	क्रि	ई	स्ट	र	•	जा	ग	या	ए
र्गा	च	पू	स	न	व	स	म्व	त	पं	ल	का
ष्ट	तु	र्णि	म	हा	शि	व	रा	त्रि	च	कु	द
मी	र्थी	मा	स	व	सं	त	पं	च	मी	म्भ	शी

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1.पंचकोषों के नाम लिखिए ?

2.अंग्रेजी विषय की क्रियाकलाप में कक्षा अरुण (यू.के.जी) का विषय क्या है?

3.दीपावली कितने दिवसीय त्यौहार है ?

4.गोवर्धन पूजा को और किस नाम से जानते हैं ?

5.गुरु नानक जयंती कब मनाई जाती है ?

6.रानी लक्ष्मी बाई के दत्तक पुत्र का क्या नाम था ?

7.जगदीश चंद्र बसु को 1917 में किस उपाधि से सम्मानित किया गया ?

8.सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा में साक्षात्कार लेने वाली बहिनों के नाम व न्यूज़ चैनल का नाम बताएं ?

9. दिनांक - 29/10/ 2024 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती में किस आचार्य बहिन ने उनके जीवन- परिचय के बारे में बताया ?

10.स्वर्ण प्राशन किस नक्षत्र में मनाया जाता है ?

11. इस-माह की ई-पत्रिका में कौन-कौन से त्योहारों का उल्लेख है ?

12. दीपावली के प्रथम दिवस पर किसकी पूजा होती है ?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया /बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 37 व 38 में दिए प्रश्नो के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 10 नवम्बर 2024 तक भेजने होंगे, जिससे आपके आने वाली परीक्षा में उनके अंक दिए जा सकें।